

प्रवासी हिंदी साहित्य: महत्व, संभावना एवं चुनौतियाँ

डॉ० योगेन्द्र सिंह

हिंदी प्राध्यापक

राजकीय उच्चतर माध्यमिक बाल विद्यालय

गीता कॉलोनी, ब्लॉक-13, दिल्ली-31

ईमेल: yogendrasin77@gmail.com

Reference to this paper should
be made as follows:

Received: 10-05-26
Approved: 29-06-26

डॉ० योगेन्द्र सिंह

प्रवासी हिंदी साहित्य: महत्व,
संभावना एवं चुनौतियाँ

Vol. XVII, Sp. Issue July.2026
Article No.08, Pg. 046-053

Similarity Check: 12%

Online available at
<https://anubooks.com/special-issues?url=jgv-si-klsmm-mrt-july-2026>

DOI: <https://doi.org/10.31995/jgv.2026.v17iSI07.008>

सारांश

प्रवासी हिंदी साहित्य, हिंदी भाषा एवं साहित्य की वैश्विक यात्रा का परिचायक है। यह न केवल विदेशों में जा बसे भारतीयों की रचनात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम है बल्कि उन्हें उनकी भाषा, देश व समाज से जोड़े रखने वाला विशिष्ट उपक्रम है। प्रवास में भारत एवं भारतीयता के अंतर्सूत्रों को यह साहित्य एक साथ जोड़ता है और विश्व फलक पर हिंदी भाषा का वैश्विक वितान रचता है। इस दृष्टि से देखने पर हम पाते हैं कि प्रवासी हिंदी साहित्य का स्वरूप एवं संभावनाएँ बहुत व्यापक हैं। इसकी परिधि किसी एक देश या समाज तक सीमित न होकर विश्व के अनेक देशों तक फैली हैं। प्रस्तुत शोधालेख में प्रवासी हिंदी साहित्य के स्वरूप, महत्व, संभावनाएँ एवं चुनौतियों को जानने-समझने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द : प्रवास, प्रवासी हिंदी साहित्य, प्रवासी भारतीय समाज, महत्व, संभावना आदि

पिछले कुछ समय से भारत से बाहर के देशों में हिंदी भाषा एवं भारतीय संस्कृति ने बहुत तेजी से अपनी महत्त्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज कराई है। विश्व के भिन्न-भिन्न देशों में बसे भारतीयों ने अपनी भाषा, समाज एवं संस्कृति को वैश्विक पहचान दिलाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। विदेशों में रह रहे इन प्रवासियों का अपनी मातृभाषा एवं सांस्कृतिक मूल्यों से जुड़ाव उनकी मूल पहचान बनकर उन्हें निर्वासित देशों में न केवल स्थापित करता है अपितु भारतीयों को विश्व से एवं विश्व को भारतीयता से जोड़ता है। ऐसे में विदेशों में रह रहे इन प्रवासी भारतीयों के लिए उनकी भाषा ही उनकी थाती बनती है, जिसके माध्यम से वे अपने देश, समाज एवं संस्कृति के उपादानों को वैश्विक स्तर पर स्थापित करते हैं। विदेशों में बसे इन प्रवासियों की अपनी मातृभाषा हिंदी में की गई यहीं रचनात्मक अभिव्यक्ति, हिंदी साहित्य का मूल स्रोत बनती है, जिसने अब प्रवासी हिंदी साहित्य के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। “हिंदी प्रवासी साहित्य हिंदी के विराट संसार का अंग है। उसने अपनी विशिष्ट संवेदना, दृष्टिकोण, परिस्थिति और सृजन-प्रक्रिया के कारण प्रवासी हिंदी साहित्य को एक मौलिक रूप प्रदान करके हिंदी-संसार में अपना योगदान किया है। भारत में रचे जाने वाले हिंदी साहित्य से यह प्रवासी हिंदी साहित्य संवेदना, परिवेश और सरोकार में एकदम भिन्न हैं। इस प्रकार हिंदी प्रवासी साहित्य दो दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है— एक तो वह अपनी मौलिकता और विशिष्टता रखता है और हिंदी साहित्य में कुछ नया जोड़ता है, दूसरे वह हिंदी साहित्य को वैश्विक बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान करता है।” इस प्रकार प्रवासी हिंदी साहित्य विदेशों को भारतीय समाज एवं संस्कृति से जोड़ने का महत्त्वपूर्ण सेतु है, जिसके माध्यम से हिंदी भाषा को वैश्विक भाषा के रूप में नई पहचान प्रदान की जा रही है। अतः कहा जा सकता है कि भारत भूमि एवं संस्कृति को वैश्विक स्वरूप प्रदान करने में प्रवासी भारतीयों एवं प्रवासी हिंदी साहित्य की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

भारतेतर देशों में बसे इन प्रवासी भारतीयों के योगदान एवं भूमिका को स्वीकार्य एवं सुचारु रूप से जारी रखना अति महत्त्वपूर्ण एवं अनिवार्य हो जाता है। वैश्विक समन्वय की यह परंपरा निरंतरता से बहती रहे, यह आसान नहीं है। आज प्रवासी भारतीयों द्वारा रचित प्रवासी हिंदी साहित्य का जितना अधिक महत्त्व है उतनी ही अधिक इसके समक्ष चुनौतियाँ भी हैं। किसी भी देश का साहित्य उस देश के समाज का प्रतिबिंब होता है, जिसके माध्यम से तत्कालीन समाज की वास्तविक छवि प्रस्तुत होती है। साहित्य के इसी दृष्टिकोण से प्रवासी हिंदी साहित्य भी अछूता नहीं है।

विदेशों में भारतीय समाज की वास्तविक छवि एवं पाश्चात्य समाज की स्वच्छंद जीवन शैली को विश्लेषित करने का महत्त्वपूर्ण माध्यम प्रवासी हिंदी साहित्य ही बनता है। इस प्रकार विश्व की विभिन्न सांस्कृतिक परंपराओं को जानने एवं समझने का प्रवासी हिंदी साहित्य महत्त्वपूर्ण आयाम है। इसीलिए इस साहित्य की वैश्विक पहुँच और व्यापकता के कारण इसका महत्त्व एवं संभावना और अधिक बढ़ जाती है। किंतु जितनी तेजी के साथ प्रवासी हिंदी साहित्य की पहुँच बढ़ रही है उतनी ही तेजी से इससे जुड़े मतभेद, विवाद और चुनौतियाँ बढ़ती जा रही हैं। प्रवासी साहित्य को हिंदी साहित्य का अंग स्वीकार करने, उसे प्रवासी की संज्ञा देने एवं साहित्य की कसौटी के मानकों पर कमतर आंकना आदि कई महत्त्वपूर्ण प्रश्न एवं चुनौतियाँ हैं, जिनका विश्लेषण एवं आंकलन किया जाना अति-महत्त्वपूर्ण है।

प्रवासी साहित्य, हिंदी साहित्य की एक स्वीकृत एवं लोकप्रिय अवधारणा है। हिंदी साहित्य में दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श एवं अन्य विमर्शों की भाँति ही प्रवासी साहित्य भी स्वयं की पहचान एक नव-विमर्श के रूप में स्थापित कर रहा है। विश्व-पटल पर प्रवासी साहित्य हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान करने वाला साहित्य बनकर उभर रहा है। भारतेतर देशों में लिखे जा रहे हिंदी साहित्य का मूल्यांकन करने की दृष्टि से इस साहित्य को प्रवासी साहित्य की संज्ञा प्रदान की गई है। यद्यपि कोई भी साहित्य प्रवासी अथवा अनिवासी नहीं हो सकता है, किंतु हिंदी साहित्य की व्यापकता को देखते हुए भारतेतर देशों में लिखे जा रहे हिंदी साहित्य को प्रवासी शब्द की विशिष्टता ने हिंदी के विराट संसार में एक स्वतंत्र पहचान देने का कार्य किया है। भारत से बाहर के देशों में हिंदी साहित्य की अनुशंगी ईकाई के रूप स्वतंत्र सत्ता स्थापित कर चुके प्रवासी साहित्य की विस्तृत चर्चा एवं विश्लेषण करने से पूर्व, प्रवासी साहित्य शब्द की उत्पत्ति, प्रवासी साहित्य का अर्थ, स्वरूप एवं अवधारणा को समझना आवश्यक है। तभी प्रवासी साहित्य के

वास्तविक स्वरूप एवं व्यापकता को समझा जा सकता है। इक्कीसवीं सदी में हिंदी भाषा एवं साहित्य ने विश्वपटल पर अपनी महत्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज कराई है। आज का साहित्य अपनी विषय वैविध्यता एवं विमर्शों के द्वारा राष्ट्रों की सीमाओं को लांघकर निरंतर अपना विस्तार कर रहा है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि भारत से बाहर अलग-अलग देशों में रचा जा रहा हिंदी साहित्य, प्रवासी हिंदी साहित्य की सामूहिक संज्ञा के रूप में अपनी पहचान स्थापित कर चुका है। यद्यपि प्रवासी साहित्य ने हिंदी साहित्य संसार के विस्तृत आंगन में अपनी स्वतंत्र पहचान स्थापित कर ली है, तथापि यह अभी हिंदी साहित्य के विशाल वट वृक्ष की एक कपोल शाखा ही है। “हिंदी के इस प्रवासी साहित्य का अपना एक संसार है— जो विशिष्ट है, मौलिक है तथा उसकी संवेदना, दृष्टिकोण एवं सरोकार भारत के हिंदी साहित्य से भिन्न है। इस भिन्नता के बावजूद वे हिंदी भाषा और भारतीयता से आबद्ध हैं। प्रवासी साहित्य का महत्व बहुआयामी है।”² हिंदी साहित्य के विस्तृत आंगन में प्रवासी हिंदी साहित्य के पौधों को पूर्ण रूप से स्थापित होने के लिए कई प्रकार की संभावनाओं एवं चुनौतियों का सामना करना बाकी है। इन सभी चुनौतियों से निपटने के पश्चात् प्रवासी साहित्य अपने मूल उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल होगा।

प्रवासी हिंदी साहित्य का महत्व एवं संभावनाएँ

बीसवीं सदी अंग्रेजी भाषा एवं अंग्रेजों के साम्राज्यवादी क्रूरताओं के लिए जानी जायेगी तो वहीं इक्कीसवीं सदी भारतीयों के उत्कर्ष एवं हिंदी भाषा एवं संस्कृति के विस्तार की सदी के रूप में जानी जाएगी। यद्यपि विश्व मंच पर अंग्रेजी भाषा के वर्चस्व एवं सर्वव्यापकता ने विश्व की सभी भाषाओं को बहुत पीछे छोड़ दिया है। तथापि विश्व की अन्य भाषाओं चीनी, फ्रेंच, जर्मन, स्पेनिश, जापानी आदि ने अंग्रेजी भाषा के वर्चस्व को चुनौती अवश्य दी है। विश्व की इन अन्य भाषाओं के समान ही हिंदी भाषा ने भी शनैः शनैः अपनी उपस्थिति विश्व पटल पर दर्ज करवाकर अपना महत्व तथा व्यापकता का परिचय दिया है। परिणामस्वरूप आज हिंदी भाषा विश्व में सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली जाने वाली तीसरी भाषा बनकर उभरी है। “विदेशों में हिंदी प्रवासी भारतीयों की संपर्क भाषा है। यूरोप के सभी देशों में जब भारतीय मिलते हैं, हम विदेशी अपने भारतीय पर्व, तीज—त्यौहार मनाते हैं, जिसमें हिंदी ही माध्यम भाषा होती है।”³ हिंदी भाषा को बढ़ती पहुँच में भारत से बाहर रह रहे भारतवंशियों एवं प्रवासी भारतीयों का महत्वपूर्ण योगदान माना जाता है। भारतेतर देशों में रह रहे इन प्रवासी भारतीयों ने अपनी भाषा, समाज एवं संस्कृति को अपने विचारों एवं संस्कारों में समाहित किया हुआ है। वे भारतभूमि से हजारों किलोमीटर दूर रहकर भी अपनी संवेदनाओं एवं सरोकारों को अपनी मातृभाषा में अभिव्यक्ति करके अपनी जड़ों से जुड़े हुए हैं। विदेशी भूमि पर स्वयं को स्थापित करने के लिए प्रवासी भारतीयों के द्वारा किए गए अथक प्रयासों ने हिंदी भाषा एवं भारतीय समाज के लिए भी आधारभूमि तैयार की है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि भारतेतर देशों में रह रहे इन प्रवासी भारतीयों ने भारत एवं विश्व के बीच एक ऐसा सेतु निर्मित किया है, जिसकी आधारशिला प्रवासी हिंदी साहित्य एवं संस्कृति है।

विश्व के कोने-कोने में जाकर बस गए ये प्रवासी भारतीय, भारतीय समाज एवं संस्कृति के वे दूत हैं जिन्होंने अपने साथ-साथ अपनी भाषा एवं संस्कृति की इन देशों में न केवल उपस्थिति दर्ज करवाई है, अपितु यहाँ के मूल निवासियों में भी भारतीय परंपराओं, मूल्यों एवं जीवन शैली के प्रति आकर्षण को बढ़ाया है। प्रायः आज देखा जा सकता है कि विदेशी लोग न केवल हिंदी भाषा के महत्व को स्वीकार कर रहे हैं, अपितु हिंदी भाषा को सीख भी रहे हैं। यह सब प्रवासी भारतीयों एवं प्रवासी हिंदी साहित्य की ही देन कहा जा सकता है। प्रवासी हिंदी साहित्य ने विश्व को देखने एवं समझने के लिए एक नई दृष्टि प्रदान की है। प्रवासी साहित्यकार अपने भारतीय संस्कारों के साथ-साथ पश्चिमी समाज एवं स्वच्छंदता के बीच ऐसी संवेदनाओं को उजागर कर रहा है जो कि भारतीय एवं पश्चिमी दोनों ही समाजों का सम्मिलित स्वरूप प्रदर्शित करती हैं। परिणामतः प्रवासी हिंदी साहित्य में कहीं भारत नजर आता है तो कहीं पश्चिम। दोनों समाजों के इसी अंतर्द्वंद्व से उपजी पीड़ा ही प्रवासी हिंदी साहित्य का मूल मानी जाती है।

वर्तमान समय में प्रवासी हिंदी साहित्य, हिंदी साहित्य की एक शाखा के रूप में अपनी उपस्थिति विश्वपटल पर दर्ज करवा रहा है। “हिंदी का प्रवासी हिंदी साहित्य भारतेतर देशों को भारत से जोड़ने का एक सेतु बनाता है, जिसके मूल में भारतवंशियों का स्वदेश-प्रेम, भाषा-प्रेम, संस्कृति-प्रेम के साथ उनकी संलग्नता, सहभागिता एवं सहयोग अटूट रूप से संबद्ध है। यह सेतु विश्व-व्यापी हिंदी साहित्यिक समाज का निर्माण करता है, विभिन्न देशों के हिंदी लेखक एवं हिंदी समाज से जुड़ते हैं और परस्पर एक-दूसरे के निकट आकर हिंदी-विश्व को सबल और स्थायित्व प्रदान करते हैं।”⁴ भारत से प्रवास की प्रक्रिया एवं प्रवासी हिंदी साहित्य ने हिंदी भाषा की नई पहचान विश्व-परिदृश्य पर कराई है। ऐसे में भारतीयों एवं उनके द्वारा किए जा रहे हिंदी साहित्य सृजन का महत्व बहुत अधिक बढ़ जाता है। आज विश्व के कई देशों में इन प्रवासी भारतीयों ने हिंदी भाषा एवं भारतीयता की ध्वजा को फहरा रखा है। पुरा प्रवासी देशों मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम आदि में स्वतंत्रता से पूर्व गए भारतीयों एवं उनके वंशजों ने हिंदी भाषा एवं भारतीय संस्कृति की ध्वजा को फहराए रखा है एवं स्वतंत्रता के पश्चात् विश्व के विकसित एवं वर्चस्वशाली देशों अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा, आस्ट्रेलिया आदि देशों में गए कुशल कामगारों एवं अन्य व्यवसायियों ने भी इन देशों में हिंदी भाषा एवं समाज की लघु संकल्पना को मूर्त रूप देने का कार्य किया है। अमेरिका एवं ब्रिटेन ऐसे ही विकसित देश हैं, जहाँ के परिवेश में भारतीयों ने अपनी भाषा, समाज एवं संस्कृति को पुष्पित एवं पल्लवित करने का कार्य किया है। अमेरिका, ब्रिटेन जैसे वर्चस्वशाली देशों में हिंदी भाषा एवं साहित्य के निरंतर विकसित होते जा रहे दायरे में प्रवासी हिंदी साहित्य एवं साहित्यकारों का महत्वपूर्ण योगदान है।

इस प्रकार प्रवासी हिंदी साहित्य प्रवासी एवं अप्रवासी, भारतीय एवं विदेशी, जीवन मूल्यों के संरक्षण एवं विघटन को स्वर प्रदान करने वाला वह साहित्य है जिसने भारतीय समाज एवं संस्कृति को विश्व मंच पर विशेष पहचान प्रदान की है तो वहीं दूसरी ओर विदेशी परिवेश एवं पश्चिमी दृष्टिकोण को समझने एवं परखने की नवीन जीवन दृष्टि प्रदान की है। वस्तुतः कहा जा सकता है कि प्रवासी हिंदी साहित्य नव संवेदनाओं एवं नवीन जीवन दृष्टि से सम्पन्न ऐसा साहित्य है जिसके मूल में भारतीय संस्कार और लक्ष्य में विश्व संस्कृति का भाव निहित है। गतिशीलता साहित्य एवं संस्कृति का अनिवार्य एवं मौलिक गुण है। प्रवासी हिंदी साहित्य इसी गतिशीलता का नवीन उद्भव है। अतः यह साहित्य विश्व संस्कृति एवं संस्कारों को भारतीय दृष्टि से आंकलन एवं विश्लेषण करने के कारण नए विषयों एवं सरोकारों को साहित्य में उजागर करने वाला साहित्य बनकर उभर रहा है। ऐसे से निःसंदेह ही कहा जा सकता है कि प्रवासी हिंदी साहित्य नवीन संभावनाओं एवं सरोकारों को मूर्तरूप प्रदान करने वाले साहित्य के रूप में अपनी पहचान स्थापित कर रहा है।

आज प्रवासी हिंदी साहित्य जिस तीव्र गति से अपनी पहचान स्थापित कर रहा है, उससे निश्चय ही इसका भविष्य सुखद प्रतीत होता है। पुरा प्रवासी देशों मॉरीशस, सूरीनाम, ट्रिनिडाड एवं टुबैगो, फीजी से लेकर पश्चिमी देशों ब्रिटेन, अमेरिका, कनाडा आदि देशों तक यह अपनी सुखद उपस्थिति दर्ज करवा रहा है। किंतु हिंदी साहित्य संसार से विश्व समुदाय को परिचित करवाने एवं हिंदी भाषा को उन तक पहुँचाने के लिए इसे अब और अधिक जिम्मेदारी को वहन करना पड़ेगा। “बात यह है कि विदेशी भारतीयों को रचनात्मक कर्म के लिए नयी भावभूमि तो सहज ही हासिल हो गई है, पर उसकी अभिव्यक्ति का कला पक्ष अभी भी कमजोर है। जब तक इस दिशा में न केवल नयी भावभूमियों की तलाश, बल्कि उस तलाश के साथ अभिव्यंजना के नए दरवाजे न खोले जाएं, नए सिक्के न गढ़े जाएं, तब तक यह गर्वोक्तियाँ खोखली ही बजेंगी।”⁵ वर्तमान समय में विश्व के भिन्न-भिन्न देशों में रह रहे प्रवासी भारतीयों के द्वारा रचे जा रहे साहित्य को प्रवासी हिंदी साहित्य के रूप में सामूहिक संज्ञा प्रदान की गई है। ऐसे में विश्व में अलग-अलग क्षेत्रों में हिंदी भाषा एवं साहित्य की धारा प्रवाहित हो रही है। आज वह हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की मान्यता प्राप्त भाषाओं की सूची में स्थान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर सकती है। हिंदी भाषा को लोकप्रिय बनाने एवं सभी को इस पुष्प कार्य में भागीदारी के लिए एक जन अभियान, संगोष्ठियों एवं कार्यशालाओं के माध्यम से प्रारम्भ किया जाना सराहनीय कदम हो सकता है। यहाँ यह भी स्मरण रखना चाहिए कि यदि हिंदी भाषा को संयुक्त राष्ट्र संघ की मान्यता सूची में स्थान दिलाना

है तो इस पुनीत कार्य में प्रवासी भारतीयों की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। अतः प्रवासी भारतीयों एवं प्रवासी साहित्यकारों को तन-मन-धन से हिंदी भाषा को विश्व भाषा बनाने के इस महायज्ञ में अपनी आहूति देनी पड़ेगी, तभी यह महान कार्य पूर्ण होगा और हिंदी भाषा को विश्व भाषा बनने की संकल्पना को मूर्त रूप दिया जा सकेगा।

विश्व के अलग-अलग देशों में लगभग दो सौ विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा का अध्ययन एवं अध्यापन किया जा रहा है। कारपोरेट से लेकर शिक्षा तक प्रत्येक जगह हिंदी अपना वर्चस्व स्थापित कर रही है। “विश्व भर में हिंदी की निरंतर बढ़ती लोकप्रियता संकेतित करती है कि अनेकविध चुनौतियों के बावजूद भारत से बाहर हिंदी शिक्षण को प्रभावी तथा सतत समृद्ध बनाने की दिशा में सार्थक प्रयास किए जा रहे हैं। विभिन्न सरकारी-गैर सरकारी संस्थाओं और व्यक्तिगत प्रयासों से हिंदी अपने लक्ष्य की ओर कदम बढ़ा रही है। इस कार्य को आगे बढ़ाने में भारतीय विद्वानों के साथ उन असंख्य विदेशी भाषाविदों और शिक्षकों के योगदान को विस्मृत नहीं किया जा सकता जिन्होंने विभिन्न संस्कृतियों का होने के बावजूद हिंदी से प्रेम किया, समर्पण भाव से हिंदी सीखकर उसे अपने जीवन में आत्मसात किया और उसकी निस्वार्थ सेवा करते हुए अपने बहुमूल्य जीवन को समर्पित कर दिया।”⁶ विश्व के विकसित राष्ट्रों, अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा, आस्ट्रेलिया, जर्मनी आदि में हिंदी बोलने वाली जनसंख्या के हिसाब से दूसरी, तीसरी भाषा के रूप में स्थान पा रही है। विश्व परिदृश्य पर हिंदी की इस सुखद उपस्थिति के पीछे प्रवासी भारतीयों के लगभग आधी सदी के प्रयास एवं मुश्किलों का अमूल्य योगदान है। प्रवासी भारतीयों के द्वारा की गई लगभग छः दशकों की यह यात्रा आज अपने गंतव्य की ओर अग्रसर हो रही है। एक ओर जहाँ प्रवासी हिंदी साहित्य में प्रवासी भारतीयों के द्वारा झेली गई इन्हीं यातनाओं और संघर्षों की व्यथा को स्वर प्रदान किया गया है तो वहीं दूसरी ओर अमेरिका, ब्रिटेन जैसे नवप्रवासी देशों के प्रवासी हिंदी साहित्य में पूरब एवं पश्चिम के साम्य-वैमनस्य की मुखर अभिव्यक्ति हुई है।

वस्तुतः प्रवासी हिंदी साहित्य भविष्य का वह साहित्य है जो वैश्विक संवेदनाओं और विश्व शांति के भाव से निहित साहित्य है। वस्तुतः कहा जा सकता है कि प्रवासी साहित्य वैश्विक अनुभूतियों से स्पंदित होने वाला साहित्य है, जो कि भारत एवं विश्व के बीच एक दूसरे को सोचने, जानने एवं समझने में सहायक होगा। संपूर्ण विश्व को भारतमय एवं भारत को विश्वमय बनाने के लक्ष्य से ओत-प्रोत प्रवासी हिंदी साहित्य भविष्य की वैश्विक संभावनाओं और नवीन चिंतन को मूर्त रूप देने की ओर अग्रसर है। यही कारण है कि यह अपार संभावनाओं एवं चुनौतियों के सामंजस्य से अपनी एक अलग पहचान एवं दृष्टि विकसित कर रहा है।

प्रवासी हिंदी साहित्य की चुनौतियाँ :

यद्यपि प्रवासी हिंदी साहित्य को एक नए विमर्श के रूप में स्वीकार करके हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार के लिए स्वर्णिम अवसर माना जा रहा है। तथापि यह पूर्ण स्वीकार्य नहीं माना जा सकता है। हिमांशु जोशी प्रवासी साहित्य के समक्ष खड़ी इन्हीं चुनौतियों को इस रूप में देखते हैं “हिंदी साहित्य के इतिहास में प्रवासी साहित्य कहीं नहीं है। आज के हिंदी साहित्य का जो इतिहास है वो अधूरा है और अधूरा इसलिए है कि इसमें ऐसे कई लोगों के नाम छूट गए हैं जिनका जितना भी हक है वो उन्हें मिलना चाहिए।”⁷ प्रवासी साहित्यकार और उनका साहित्य इसी विडंबना का शिकार हैं। प्रारंभिक साहित्य इतिहासकारों और समीक्षकों ने इन साहित्यकारों के रचनाकर्म की ओर ध्यान नहीं दिया। परिणामतः एक लंबे समय तक इनको हाशिए पर ही रहना पड़ा। वर्तमान समय में धीरे-धीरे यह परंपरा अपना अस्तित्व ग्रहण कर रही है और एक साहित्यिक धारा के रूप में पहचान बनाने में सफल हुई है। प्रवासी हिंदी साहित्य मूलतः भारतेतर देशों में लिखा जा रहा हिंदी साहित्य है, जिस कारण विदेशी परिवेश एवं भाषा, संस्कृति एवं जीवनशैली आदि अनेक चुनौतियाँ इसके सम्मुख खड़ी हैं, जिनके समाधान के पश्चात् ही प्रवासी हिंदी साहित्य अपनी मूल पहचान स्थापित कर सकता है। प्रवासी हिंदी साहित्य के समक्ष महत्वपूर्ण चुनौतियाँ निम्नलिखित हैं—

- पुरा-प्रवासी देशों में लिखा जा रहा हिंदी साहित्य कई पीढ़ियों की जीवन यात्रा का साहित्य है। इसे आने वाली पीढ़ियों में अनवरत् रूप से प्रवाहमान बनाए रखना, सबसे चुनौतीपूर्ण कार्य है।

● नवप्रवासी देशों अमेरिका, ब्रिटेन एवं कनाडा आदि में लिखा जा रहा प्रवासी हिंदी साहित्य अभी प्रथम पीढ़ी के ऐसे लेखकों के द्वारा लिखा गया हिंदी साहित्य है, जिनका जन्म भारत में हुआ है और जिनका भारत से विशिष्ट लगाव व जुड़ाव रहा है। “इसी चिंता को सुषम बेदी ने प्रकट किया है “ज्यादातर लिखने का कर्म वही करते रहे जो भारत में भी ऐसा कुछ करते रहे। परिस्थितियाँ उनको यहाँ ले आयी तो उनका काम यहाँ भी जारी रहा। अमेरिका ने हिंदी के लेखक अभी पैदा नहीं किये। यहाँ पैदा होकर बड़ा होने वाला अंग्रेजी को ही अभिव्यक्ति का माध्यम बनाता है। इसलिए कहाँ तक यहाँ रचे गये साहित्य को भारतीय कहा जाए या अमेरिकी। यह सवाल बना रहता है? कृष्ण बलदेव वैद, उषा प्रियंवदा या वेद प्रकाश वटुक भारत में भी लिख रहे थे, यहाँ भी। जो लौट गए उनको हमने भारतीय कहा जो यहाँ टिके रहे वे अमेरिकी कहलाये।”⁸ ऐसे में स्वाभाविक है कि अपनी प्रथम भाषा एवं मातृभाषा में उनकी रुचि है और वे साहित्य सृजन कर रहे हैं। लेकिन इस प्रथम पीढ़ी के पश्चात् इन देशों में क्या इसी प्रकार हिंदी साहित्य सृजन की परंपरा विकसित हो पाएगी? यह प्रश्न स्वयं में विचारणीय है। अतः इन नवप्रवासी देशों में प्रारंभ हुई हिंदी साहित्य लेखन की इस परंपरा को निरंतर जारी रखना स्वयं में एक चुनौतीपूर्ण कार्य है।

● नवप्रवासी देशों में वहाँ पैदा हुई भारतीयों की संतानों का हिंदी भाषा एवं साहित्य के प्रति लगाव पैदा करने, प्रवासी हिंदी साहित्य की दूसरी और तीसरी पीढ़ियाँ तैयार करना, प्रवासी हिंदी साहित्य के समक्ष महत्वपूर्ण चुनौती है।

● भारत से बाहर लिखा जा रहा प्रवासी हिंदी साहित्य प्रवासी अथवा अप्रवासी, विदेशी, प्रवासी लोगों का हिंदी साहित्य आदि नामकरण के मतभेदों में उलझता जा रहा है। इस विवाद का निवारण भी प्रवासी हिंदी साहित्य के भविष्य के समक्ष महत्वपूर्ण चुनौती है।

● प्रायः भारत में लालफीताशाही एवं शासन के गठजोड़ ने बनते-बनते कार्यों को भी बिगाड़ दिया है अथवा उनके विकास की गति को अवश्य धीमा कर दिया है, ऐसे में प्रवासी हिंदी साहित्य को इस गठजोड़ के राजनीतिक ताने-बाने से बच निकलना भी एक चुनौती माना जा सकता है।

● प्रवासी भारतीयों को विदेशों में भारत के प्रतिनिधि एवं उनके द्वारा लिखे जा रहे साहित्य को भारतीय संस्कृति के साहित्य के रूप में देखा जा रहा है, ऐसे में अपनी स्वतंत्र पहचान बनाना भी प्रवासी हिंदी साहित्य के लिए महत्वपूर्ण चुनौती है।

● निःसंदेह ही प्रवासी हिंदी साहित्य ने हिंदी भाषा एवं संस्कृति की पहचान विश्व मंच पर कराई है। इस कार्य को इसी निष्ठा व लगन से जारी रखना भी अनिवार्य है। ताकि हम विश्व मंच पर अपनी भाषा को मजबूती प्रदान कर सकें एवं संयुक्त राष्ट्र संघ की अधिकारिक भाषा के रूप में हिंदी भाषा को स्थापित करने का सपना पूर्ण हो सके।

● भारतेतर देशों में लिखा जा रहा प्रवासी हिंदी साहित्य अब प्रवासी साहित्य के रूप में अपनी लोकप्रियता प्राप्त कर चुका है, किन्तु अभी भी कुछ प्रवासी लेखक साहित्य में प्रवासीपन के विशेषण को फतवा स्वीकार करके खारिज कर रहे हैं। “यह बात सही है प्रवासी साहित्य भाषा शिल्प और बिंब के स्तर पर कमजोर है। लेकिन इसकी इस कमजोरी को पूरी रचना जगत् और भाव जगत् के साथ जोड़कर नहीं देखा जाना चाहिए। प्रवासी साहित्य के प्रति हिंदी आलोचकों का रवैया उपेक्षापूर्ण रहा है।”⁹ इस स्थिति में उन्हें यह समझना अति आवश्यक हो जाता है कि यदि इस साहित्य से प्रवासी विशेषण को हटा दिया जाएगा तो यह केवल उन लोगों तक सीमित होकर रह जाएगा। ऐसे लेखकों को मुख्य धारा से जोड़े रखना भी चुनौतीपूर्ण कार्य है।

● प्रवासी हिंदी साहित्य की पहुँच सर्वसुलभ एवं सर्वव्यापक बनाना भी एक महत्वपूर्ण चुनौती है। “लगभग सभी देशों में बेशुमार साहित्य आज हिंदी में लिखा जा रहा है। उससे बहुत कम भारत की पत्रिकाओं में प्रकाशन पाता है। इसके कई कारण हो सकते हैं। संपर्क की कमी रचना और समय की माँग का अंतर भी आड़े आता है। फिर भी बहुत से लोग हैं जिनके नाम अपने परिवेश से बाहर जाने जाते हैं।”¹⁰ प्रायः देखने में आता है कि विश्वविद्यालय में प्रवासी साहित्य पर शोध कार्य कर रहे छात्रों को न तो शोध सामग्री ही मिल पाती है और न ही प्रवासी साहित्यकारों का

सहयोग। ऐसी स्थिति में यह शोध छात्र किस प्रकार शोध कार्य आगे बढ़ा सकते हैं एवं प्रवासी हिंदी साहित्य के संपूर्ण पक्षों को उद्घाटित कर सकते हैं। यह तथ्य प्रवासी साहित्यकारों को समझना चाहिए, यह स्थिति अभी तक प्रत्येक शोधार्थी एवं प्रवासी साहित्य के पाठकों के लिए चुनौती बनी हुई है।

● भारत सरकार को हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार हेतु भारत एवं विदेशों में संगोष्ठियाँ, कार्यशालाएँ एवं निःशुल्क हिंदी शिक्षण जैसे कार्यक्रमों को आयोजित करवाने की अति आवश्यकता है। यह कार्य केवल प्रवासी भारतीयों के द्वारा अकेले संभव नहीं है। अतः प्रवासी भारतीयों के साथ मिलकर भारत सरकार को ऐसे आयोजनों के उद्देश्यों एवं महत्त्व को समझकर ईमानदारी से प्रयास करना भी महत्त्वपूर्ण चुनौती है ताकि वास्तविक रूप में प्रवासी हिंदी साहित्य एवं हिंदी भाषा का प्रचार प्रसार हो सके।

उपरोक्त सुझावों एवं मंतव्यों को देखकर साफ तौर पर प्रतीत होता है कि प्रवासी हिंदी साहित्य एवं साहित्यकारों के समक्ष अनेक चुनौतियाँ मुँह बाये खड़ी हैं। विमलेश कांति वर्मा इन्हीं चुनौतियों को और अधिक स्पष्ट करते हैं “प्रवासी हिंदी के संबंध में सबसे बड़ी समस्या और प्रमुख चुनौती यही है कि इन भाषा रूपों का संरक्षण और संवर्धन कैसे हो? विश्व की अनेक भाषाएँ आज विलुप्त होने की कगार पर हैं। कुछ विलुप्त हो चुकी हैं। विलुप्त भाषाओं के साथ उन भाषाओं के बोलने वालों की संस्कृति और उसमें संचित अभिव्यक्तियाँ भी लुप्त हो जाती हैं। अवधेन है कि मॉरीशस, त्रिनिडाड और दक्षिण अफ्रीका में बोली जाने वाली हिंदी, जो वहाँ के प्रवासी भारतीयों द्वारा विकसित हुई थी, उनके दुख-सुख की, आशा-निराशा की अभिव्यक्तियों की संचित निधि थी वह लुप्त हो रही है और उसका स्थान अंग्रेजी लेती जा रही है।”¹¹ पुरा-प्रवासी देशों में प्रवासी भारतीयों के समक्ष आई यही स्थितियाँ विचारणीय हैं। इसलिए यहाँ रह रहे भारतवंशी समाज को उनकी जड़ों से जोड़ें रखने के लिए सार्थक प्रयास किए जाने की आवश्यकता है।

वस्तुतः प्रवासी हिंदी साहित्य भविष्य की नवीन दृष्टि से ओतप्रोत साहित्य है। यह भारतवंशियों की स्मृतियों, पीढ़ाओं और कष्टों के वर्णन का साहित्य होने के साथ-साथ मानसिक द्वंद्वों, पश्चिमी संस्कृति की भौतिकता एवं आधुनिक समय की विसंगतियों को स्वर प्रदान करने वाला साहित्य है। आज भारत से बाहर रह रहे भारतवंशी अपनी मातृभाषा एवं संस्कृति के प्रति प्रयत्नशील हैं, जबकि उनका यह प्रयास केवल रेत को मुट्ठी में पकड़ने की चेष्टा मात्र है। विदेशों में रह रहे इन भारतीयों की संतानें भारतीय मूल्यों एवं संस्कारों को पीछे छोड़ती जा रही है। ठीक इसी भांति पश्चिमी संस्कृति के मोह से ग्रस्त भारतीय युवा पीढ़ियाँ भी अपने आपको अपने संस्कारों से दूर कर बैठी हैं। प्रवासी साहित्यकार सुषम बेदी विश्व में बन रहे हिंदी एवं भारतीय डायस्पोरा की संभावनाओं और चुनौतियों को इस रूप में देखती हैं “मेरा यह विश्वास अब भी अटल है कि लेखनी का जादू ही भाषा को भी सम्मान दिलाएगा। किसी जमाने में चंद्रकांता संतति को पढ़ने के लिए बहुतों ने हिंदी सीखी थी। आज भी हिंदी फिल्मों का जादू भाषा को जिंदा रखे है। अब साहित्य को भी अपना कोई अनूठा करतब दिखाना है और यह दायित्व खासतौर से डायस्पोरा के लेखक पर ही पड़ेगा, क्योंकि सवाल सिर्फ भारत का ही नहीं, विश्व का है। अब हिंदी का मुकाबला वैश्विक स्तर पर होगा।”¹² इस अवस्था में प्रवासी साहित्य एवं समाज विदेशी भूमि पर लघु भारत की संकल्पना प्रस्तुत करके अपनी संस्कृति एवं मूल्यों से विमुख हो चुके भारतीयों को पुनः भारत से जोड़ने का कार्य कर रहा है। वहीं दूसरी ओर यह साहित्य भारत एवं विश्व दोनों के मध्य एक सामूहिक, सांस्कृतिक मंच प्रदान करके वैश्विक एकता एवं विश्व शांति का मार्ग भी प्रशस्त कर रहा है। निष्कर्षतः प्रवासी हिंदी साहित्य नई संभावनाओं एवं नव चिंतन दृष्टि का साहित्य है जिसके मार्ग में अनेक संभावनाएँ एवं चुनौतियाँ निहित हैं।

संदर्भ

1. गोयनका कमल किशोर (प्र०सं०), प्रवासी साहित्य : जोहान्सबर्ग से आगे, विदेश मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, 110011, प्रथम संस्करण 2015, पृ०सं०-17-18

2. गोयनका कमल किशोर, हिन्दी प्रवासी साहित्य (गद्य-विधाएँ), यश पब्लिकेशन, दिल्ली, 110032 संस्करण 2018, पृ0सं0-223
3. शुक्ल सुरेश चंद्र, विश्व में हिंदी : स्थिति और संभावना, विदेशों में हिंदी, शांति प्रकाशन, रोहतक, 124001, प्रथम संस्करण 2013, पृ0सं0-122
4. गोयनका कमल किशोर (प्र०सं०), प्रवासी साहित्य : जोहान्सबर्ग से आगे, विदेश मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, 110011, प्रथम संस्करण 2015, पृ0सं0-12
5. बेदी सुषम, हिंदी भाषा का भूमंडलीकरण, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 110002, संस्करण 2018, पृ०सं० 115
6. पाण्डेय नूतन, हिंदी-शिक्षण अधिगम की वैश्विक चुनौतियाँ और संभावनाएँ, गंगनाचल, विदेश में हिंदी भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, नई दिल्ली, 110002, प्रथम संस्करण 2024, पृ0सं0-238
7. जोशी हिमांशु, वे जो लिख रहे हैं, चौंकाने वाला है, वर्तमान साहित्य (प्रवासी साहित्य विशेषांक), अलीगढ़, 202001, मई संयुक्तांक (2006), पृ0सं0-28
8. बेदी सुषम, अमेरिका में हिंदी साहित्य-रचना : आत्मान्वेषण की घड़ियाँ, आठवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन, आलेख और प्रतिवेदन, महात्मा गाँधी अन्तरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, 442001, प्रथम संस्करण 2007, पृ0सं0-81
9. मंडल केदार कुमार, प्रवासी हिंदी साहित्य : दशा एवं दिशा, आठवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन, आलेख और प्रतिवेदन, महात्मा गाँधी अन्तरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, 442001, प्रथम संस्करण 2007, पृ0सं0-92
10. कुमार डॉ० कृष्ण, प्रवासी मानसिकता, भाषा और सृजन, आठवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन, आलेख और प्रतिवेदन, महात्मा गाँधी अन्तरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, 442001, प्रथम संस्करण 2007, पृ0सं0-91
11. वर्मा डॉ० विमलेश कांति, प्रवासी हिंदी : इतिहास, स्वरूप एवं समस्याएँ, विश्व हिंदी पत्रिका, <https://Patrikagan.Vishwahindi.com> से उद्धृत
12. बेदी सुषम, हिंदी भाषा का भूमंडलीकरण, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 110002, संस्करण 2018, पृ0सं0-26